प्राक्कथन

हिमाचल प्रदेश 'देवभूमि' के नाम से विख्यात एक धर्म परायण प्रदेश है। यहां के लोगों का जीवन किसी न किसी धार्मिक अनुष्ठान से जुड़ा हुआ है। हिमाचल प्रदेश में पूजित विभिन्न धर्मानुयायियों के असंख्य लोकगीत, लोकवाद्य प्रचलित हैं।

हिमाचली जीवन शैली विक्रमी संवत से जुड़ी है जिसका आरम्भ चैत्र मास से होता है। प्रदेश में वर्षभर हर क्षेत्र में विभिन्न पर्व, त्यौहार एवं मेले मनाए जाते हैं। उनमें से कुछ देवी–देवताओं से सम्बन्धित तथा कुछ लोक मनोरंजन के लिए होते हैं। जिनमें रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं।

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख मेले, पर्व एवं त्यौहार मण्डी की शिवरात्री, कुल्लू का दशहरा, और जन्माष्टमी, दीपावली, बैसाखी, गुग्गा नवमी आदि हैं। जिनमें देवताओं की जातराएं तथा झांकियां आदि शोभायात्राएं निकाली जाती हैं। पारम्परिक रीति–रिवाज़ों के अनुसार यह पर्व त्यौहार बुहत उत्साह से मनाए जाते हैं।

समस्त विश्व की संस्कृति उसकी अमूल्य धरोहर मानी जाती है, जो किसी स्थान विशेष के जनसमूह की विशेषताओं को जनता के सामने प्रस्तुत करती है।

हिमाचल अर्थात् 'हिम का आंचल' और यहां का जनजीवन कैलाश पर्वत के स्वच्छन्द, सुरम्य एवं पवित्र आंचल में संगीत के प्रवर्तक सर्वमान्य कैलाशपति भगवान् शंकर की तपोस्थली रहा है। यहां की कला संस्कृति अपना प्रकाश चारों दिशाओं में फैलाती है। यहां बहुत सी कलाओं और प्रतिभाओं का समावेश है और लोकगीत, वाद्य, नृत्य संस्कृति के अमूल्य रत्न माने जाते हैं। उनमें से लोकगीतों को अधिक प्रमुखता दी गई है, इन्हीं गीतों के माध्यम से जनसाधारण के मनोभावों को शब्दों तथा स्वरों में गूंथकर एक लोकगीत के रूप में व्यक्त करता है। वह गीत ज्यादातर सच्ची घटनाओं पर आधारित होते हैं।

प्रदेश में असंख्य लोकगीत हैं और उन सबकी सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना एक व्यक्ति विशेष के लिए पर्याप्त नहीं है। यह बहुत असम्भव सा लगता है

लेकिन फिर भी मैंने इस शोधकार्य में उन पारम्परिक लोक कलाकारों को लिया है जिनके पास आज भी हमारी सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षित है तथा जिन्होंने अपने दिलोंजान से लोक संगीत को उजागर करने के अथाह प्रयास किए हैं। उन कलाकारों ने हिमाचली लोकसंगीत को जनमानस तक पहुंचाने के लिए और उनके हृदय में वास करवाने में अपना र्स्वस्व न्यौछावर कर अपना विशेष योगदान दिया है उन पारम्परिक लोक कलाकारों का मैं सहृदय अभिनन्दन करती हूं जिन्होंने युवा वर्ग, नई पीढ़ी को हिमाचली लोक संस्कृति से अवगत करवाया है।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में हिमाचल प्रदेश के प्रमुख पारम्परिक लोक कलाकारों के जीवन परिचय उनकी कलाकृतियां और उनका लोकसंगीत क्षेत्र में योगदान वर्णन किया है। इस शोध कार्य के पांच अध्याय हैं:–

प्रथम अध्याय "हिमाचल प्रदेश का परिचय",

द्वितीय अध्याय "हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जनपदों की लोक संस्कृति का निरूपण",

तृतीय अध्याय "हिमाचल प्रदेश के प्रमुख पारम्परिक लोक कलाकारों का जीवन परिचय",

चतुर्थ अध्याय "प्रमुख पारम्परिक लोक कलाकारों की कलाकृतियां एवं लोकसंगीत क्षेत्र में योगदान",

पंचम अध्याय, "प्रमुख पारम्परिक लोक कलाकारों व उभरते लोक कलाकारों का लोकसंगीत के विषय में तुलनात्मक विश्लेषण",

परिशिष्ट "इसमें *चित्रावली, शोध–प्रबन्ध की अनुपूरक एवं महत्वपूर्ण विविध सामग्री प्रस्तुत की जाएगी।",*

उपसंहार "इसमें *शोध प्रबन्ध का सारांश* अर्थात् समस्त *शोध–प्रबन्ध की निष्पत्तियों* अथवा *संभावनाओं* को उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा।,

संदर्भ ग्रथं सूची", शोध के अन्त में संदर्भ ग्रंथों की सूचि क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत की जाएगी।

दो शब्द

इससे पूर्व कि मैं उन सभी महानुभावों के प्रति आभार प्रकट करूँ जिनके आर्शीवाद से इस शोधकार्य को पूर्ण रूप देने में समर्थ हो पाई हूं। मैं सर्वप्रथम सर्वशक्तिरूप इस सृष्टि के रचियता ईश्वर को नतमस्तक हो कोटि–कोटि श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूं कि उन्होंने मुझे इस सृष्टि में मानव जीवन प्रदान कर अपने गुरुजनों के दर्शाये मार्ग पर चलकर इस शोधकार्य को सम्पन्न करने की क्षमता प्रदान की।

मैं हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय भवन को भी उस मन्दिर की उपमा देकर सहस्र प्रणाम करती हूं जिसमें विराजत गुरु स्वरूप मूर्तियों के दर्शन उनके आर्शीवाद तथा उनमें आस्था रखते हुए वह सब कुछ प्राप्त किया जिस हेतु इस मन्दिर रूपी भवन में प्रवेश किया था।

मैं शोध निर्देशक श्री चमन लाल वर्मा जी को सहस्त्रों नमन करती हूं जिन्होंने अपने आपार ज्ञान भण्डार और विद्वता से पग–पग पर मुझे उचित निर्देश देकर इस कार्य को पूरा करने हेतु मेरा मार्ग प्रशस्त किया। इनके मार्ग दर्शन एवं प्रेरणा तथा आर्शीवाद के बिना मेरा यह कार्य पूरा होना सम्भव न होता। अतःएव प्रेरणास्त्रोत श्री चमन लाल वर्मा जी का भविष्य में भी स्नेह एवं आर्शीवाद प्राप्त होता रहेगा। जिनका संगीत विषय पर अनुभव मुझ जैसे सैंकड़ों शिष्यों को जीवन लाभ प्रदान करेगा, यह एक अटूट सत्य है। मैं श्री जीतराम शर्मा जी विभागध्यक्ष की भी बहुत आभारी हूं जिनकी शुभकामनाओं का परिणाम ही है कि आज यह शोध–ग्रन्थ पूर्ण हुआ।

मैं विभाग के अन्य पूजनीय गुरुजनों का सहृदय धन्यवाद करती हूं, जिनके पूर्ण सहयोग से मैं इस स्तर को छू पाई। साथ ही मैं उन सभी विभागीय सदस्यों की आभारी हूं जिनका पूर्ण सहयोग मेरे साथ रहा। उन सभी कलाकारों का भी सहृदय अभिवादन करती हू जिनके गाए गीत इस शोध–प्रबन्ध में स्वर लिपिबद्ध किये गए हैं।

साथ ही मैं अपनी माता श्रीमती अम्बिका शर्मा एवं पिता स्वर्गीय श्री चिरंजी लाल शर्मा को श्रद्धापूर्वक सहस्त्रों बार प्रणाम करती हूं जिनकी आशाओं के अनुकूल एवं उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर आगे बढ़कर उनकी प्रारम्भिक प्रेरणाओं का अनुकरण करते हुए ये कार्य पूरा कर पाई।

मैं अपने जीवन साथी श्री राकेश शर्मा जी की जीवनपर्यन्त ऋणी रहूंगी जिनके स्नेह और आर्शीवाद से मैं अपने इस कार्य को पूर्ण करने में समर्थ हो पाई। मैं अपने भाई विक्रांत शर्मा एवं बहन सारिका शर्मा की भी आभारी हूं जिनके सहयोग से मेरा शोध कार्य पूर्ण हुआ। साथ ही मैं अपने पारिवारिक सदस्यों का भी आभार व्यक्त करती हूं।

मैं हिमाचल कला संस्कृति एवं भाषा अकादमी की भी ऋणी रहूंगी जिसके पुस्तकालय से शोध–प्रबन्ध के लेखन हेतू आवश्यक सामग्री मुझे समयानुसार उपलब्ध होती रहीं।

मैं कृष्णा जी एवं मनु जी का सहृदय से धन्यवाद करती हूं जिन्होंने इस शोध ग्रन्थ की टंकण क्रिया को पूर्ण करने के लिए अपनी कार्यक्षमता से कहीं अधिक कार्य किया। उनके इस कार्य की प्रशंसा को शब्दों की परिधि में बांधना सम्भव नहीं।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में लेखन कार्य के लिए अनेक विद्वानों के ग्रन्थों तथा पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों से सहायता ली गई है जिसके लिए मैं इन विद्वानों और लेखकों की सदैव आभारी रहूंगी।

यदि विषय प्रतिपादन में कोई चूक रह गई हो या शोध ग्रन्थ में कोई त्रुटि हो तो मैं पूर्ण उत्तरदायित्व लेते हुए संगीत विद्वानों तथा पाठकों से क्षमाप्रार्थी हूं। यदि मेरे पूर्ण निष्ठा से किए गए, मेरे इस लघु कार्य से संरक्षण में सहायता हो सकेगी तो मैं अपने इस प्रयास को सार्थक समझूंगी।

दिनांक ~~26/08/2008~~ 30/01/09

शोधार्थी
Sonika Sharma
सोनिका शर्मा